॥ श्री अनिरुद्ध चलिसा ॥

दोहा

श्रीसद्गुरुसुमिरनबल सब कछु करत सुहाई ।
अनिरुद्ध नाम की रटन लगाई टूट गई दुख की डोरी ॥

चौपाई

जय अनिरुद्ध पूरण अवतारा । जय गोविंद परमसुखधामा ॥१॥
जय नंदारमणा बलवंता । रं रं रं रं जय अभिरामा ॥२॥
रात दिवस अनिरुद्ध धुन गांऊ । साथ में लायो सुचितसो दाऊ ॥३॥
सब रिषिजन मिल जपत महेशु । गोपगोपीजन गात रमेशु ॥४॥
कार्तिकमास की पूरणमासी । प्रगट भयो जै जै त्रिपुरारि ॥५॥
पूरणशक्ति सर्व सुखखानी । दयाकृपाकर बल का दानी ॥६॥
गोपीनाथजी दर्शन पावत । श्रीविट्ठल के चरणा लागत ॥७॥
स्वामीकृपा से जप रट चालत । बंश तुम्हारे है प्रभु आवत ॥८॥
पाय आशिषा वृद्ध अपारा । कहत कहानी निज कुलदारा ॥९॥
कुल अपने है विट्ठल आवत । निरगुण से जब सगुण प्रकाशत ॥१०॥
श्यामल रुप मुनिजन सेवि । द्वार खडै नौ निधि की देवि ॥११॥
भाल चंद्रमा शोभत नीका । सहज सूरज परभा हो फीका ॥१२॥
भगत ने जब ही नाम पुकारा । तब ही बापू दु:ख निवारा ॥१३॥
क्रिपा महान तुम सम नाही । राजा रंक भेद नहीं पाई ॥१४॥
साईनिवास में परगट ग्वाला । हेमाड्या की अंतिम ज्वाला ॥१५॥
पूजन मीनाभाभी कीन्हा । सद्गुरुरुप में दरसन दीन्हा ॥१६॥
सुरगणसहित इंद्र करी वंदन । भवभयनाशन खलदलमर्दन ॥१७॥
सूरजवंशी राम धराधर । चक्रपाणि हरि सद्गुण आगर ॥१८॥
नाम की सेज प्यार की माला । ह्रिदय सिंहासन बसत अकाला ॥१९॥
पुरुषार्था कलजुग भूल जाई । जुईगांव बस काज दिखाई ॥२०॥
पंचपुरुष श्रद्धा बतलाई । धरमचक्र रख शुरु लडाई ॥२१॥
भारतवास की गौ जो माता । तुम बन खडे गौ के त्राता ॥२२॥
नाश अधर्मा पालन धर्मा । यही कारण अवताराण वर्मा ॥२३॥
धरम ते भगति, जोग ही नामा । ज्ञान ते दर्शन अनिरुद्धधामा ॥२४॥

राम विराम सुखद अभिरामा । कलिमलभंजक अनिरुद्ध नामा ॥२५॥
जगत में एक प्राणपति बापु । तासु बिमुख किमी लह विश्रामु ॥२६॥
बापु नामसम बल कछु नाही । रुपु बल नाश करई छनमाही ॥२७॥
महापापी जब नाम सुमिरही । जोर अपार दुखसागर तरही ॥२८॥
निज इच्छा अनिरुद्ध अवतरइ । धरम प्रेम आनंदन लागी ॥२९॥
सेवा करबे वो बड भागी । चरम कृपालु बापु अनुरागी ॥३०॥
बापु नामबिनु करम अधुरा । श्रीदर्शन बिनु अन्न ही जहरा ॥३१॥
कोई मनोरथ बड मन माही । प्रयास करत पर फलवत नाही ॥३२॥
धीर धरहु ना होऊ उदासा । सब मिली जाऊ अनिरुद्धपासा ॥३३॥
अनिरुद्ध नाम प्रफुल्लित गाता । टरत ही पीड रोग दूर जाता ॥३४॥
देख चरण सुमंगलमूला । जानऊं बापु भगति अनुकूला ॥३५॥
परबत सम बडौ मम भागु । घोर पाप मालिक अनुरागु ॥३६॥
सदैव सरनागत हितकारी । करि रच्छण भवभयमलहारी ॥३७॥
बापु भगति को कहंऊ बखानी । सहज मार्ग जश पाव ही प्रानी ॥३८॥
अनिरुद्ध गावत पुलक सरीरा । गद्‌गद्‌ बानी अंखी बह नीरा ॥३९॥
बापु चरणधूली मोहे अतिप्रेमा । तन मन धन सेवा द्रिढ नेमा ॥४०॥

दोहा

अनिरुद्ध चलीसा स्तोत्र यह इक मंत्र महान अपार ।
सर्व कामना पूरन प्रति व्यर्थ बचन ना जाय ॥
पिपा निरबुद्ध सहज जड, ना जाने जोग तप नेम ।
बापु क्रिपा नहि पाऊं तसि, जसि चरणन्ही प्रेम ॥

नंदापति अनिरुद्ध की जय । चक्रधर चिदानंद की जय ।
बोलो रे भाई दाऊ सुचित की जय जय जय ॥

॥ इति आद्‌यपिपाविरचितं श्रीअनिरुद्धचलीसास्तोत्रं सम्पूर्णम्‌ ॥